This question paper contains **8** printed pages]

Your Roll No.....

4365

B.A. (Programme)/II **G-II**

HINDI DISCIPLINE—Paper II

हिंदी अनुशासन प्रश्न-पत्र II

(हिंदी गद्य विधाएँ, उपन्यास और हिंदी गद्य साहित्य का परिचयात्मक इतिहास) (B-138)

(प्रवेश-वर्ष 2006 और तत्पश्चात् नियमित कॉलेजों के विद्यार्थियों के लिए/SOL के विद्यार्थियों के लिए)

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 100

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 12+12=24

(क) चैतन्य-पूजा ही से मनुष्य का कल्याण हो सकता है। समाज का पालन करने वाली दूध की धारा जब मनुष्य के प्रेममय हृदय, निष्कपट मन और मित्रतापूर्ण-नेत्रों से निकलकर बहती है तब वही जगत में सुख के खेतों को हरा-भरा और प्रफुल्लित करती है और वही उनमें फल भी लगाती है। आओ, यदि हो सके तो, टोकरी उठाकर कुदाली हाथ में लें।

P.T.O.

अथवा

अशोक आज भी उसी मौज में है, जिसमें आज से दो हजार वर्ष पहले था। कहीं भी तो कुछ नहीं बिगड़ा है, कुछ भी तो नहीं बदला है। बदली है मनुष्य की मनोवृत्ति। यदि बदले बिना वह आगे बढ़ सकती तो शायद वह भी नहीं बदलती। और यदि वह न बदलती और व्यावसायिक संघर्ष आरंभ हो जाता—मशीन का रथ घर्र-घर्र चल पड़ता-विज्ञान का सवेग धावन चल निकलता, तो बड़ा बुरा होता।

(ख) क्या बताऊँ ? गरीबी की बीमारी थी। पाँच साल हो गए, पेंशन पर बैठे। पर पेंशन अभी तक नहीं मिली। हर दस पन्द्रह दिन में एक दरख्वास्त देते थे, पर वहाँ से या तो जवाब आता ही नहीं था और आता, तो यही कि तुम्हारी पेंशन के मामले पर विचार हो रहा है। इन पाँच सालों में सब गहने बेचकर हम लोग खा गए। फिर बरतन बिके। जब कुछ नहीं बचा था, फाके होने लगे थे। चिंतन में घुलते-घुलते और भूखे मरते-मरते उन्होंने दम तोड़ दिया।

अथवा

आज बंगाल की धरती पर एक नयी बात थी। कहते हैं कि एक दिन दो हजार बरस पहले एक नक्षत्र को देखकर तीन महान देशों से तीन महाविद्वान पैदल चलकर एक चरवाहे के बच्चे के पालने के पास आए थे और वह बच्चा एक दिन बड़ा होकर अपने लिए नहीं, मरते दम तक मानव को क्षमा करता हुआ, अपनी सूली आप उठाकर ले गया था। मैं सोच रहा हूँ कि जो डॉक्टर-विद्यार्थी हैं क्या वैसे ही नहीं हैं ? यह जो बंग आज धराशायी है, क्या यही एक दिन उतना समर्थ नहीं हो जाएगा ?

2. (क) किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 4×5=20

(*i*) गंगी का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(*ii*) 'डिप्टी कलेक्टरी' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

(*iii*) 'ब्रेख्त और एक उदास नगर' के आधार पर जर्मनी का राजनैतिक वर्णन कीजिए।

(*iv*) 'भोलाराम का जीव' कहानी में निहित सामाजिक भ्रष्टाचार को स्पष्ट कीजिए।

P.T.O.

(v) " 'बिबिया' नारी जीवन का मार्मिक वृत्तांत है।" स्पष्ट कीजिए।

(vi) हरिवंशराय बच्चन के लंदन जाने के उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।

(vii) मजदूरी करने का लाभ स्पष्ट कीजिए।

(ख) किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 3×3=9

(i) लेखक अपने साथियों के साथ कुष्टिया टाउन क्यों जाता है ?

(ii) मिठ्ठललाल कौन थे ?

(iii) 'कौन कहता है बंगाल मर गया', यह कथन किसने और किससे कहा ?

(iv) पश्चिमी सभ्यता का नया आदर्श क्या है ?

(v) गंगी के हाथ से रस्सी और घड़ा छूट कर कुएँ में क्यों गिर जाते हैं ?

(vi) सच्चे प्रेम के महत्व पर प्रकाश डालिए।

(vii) करुणा अपना बीज अपने आलंबन या पात्र में क्यों नहीं फेंकती।

3. किसी **एक** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 11

(क) बरसात के दिन हैं, सावन का महीना। आकाश में सुनहरी घटाएँ छायी हुई हैं। रह-रहकर रिमझिम वर्षा होने लगती है। अभी तीसरा पहर है, पर ऐसा मालूम हो रहा है, शाम हो गई। आमों के बाग़ में झूला पड़ा हुआ है। लड़कियाँ भी झूल रही हैं और उनकी माताएँ भी। दो-चार झूल रही हैं, दो-चार झुला रही हैं। कोई कजली गाने लगती है, कोई बारहमासा। इस ऋतु में महिलाओं की बाल-स्मृतियाँ भी जाग उठती हैं। ये फुहारें मानों चिन्ताओं को हृदय से धो डालती हैं, मानों मुरझाये हुए मन को भी हरा कर देती हैं। सबके दिन उमंगों से भरे हुए हैं। धानी साड़ियों ने प्रकृति की हरियाली से नाता जोड़ा है।

(ख) विवाहित जीवन के इन दो-ढाई सालों में कभी उसका हृदय अनुराग से इतना प्रकम्पित न हुआ था। विलासिनी

रूप में वह केवल प्रेम के आवरण के दर्शन कर सकती थी। आज त्यागिनी बनकर उसने उसका असली रूप देखा। कितना मनोहर, कितना विशुद्ध, कितना विशाल, कितना तेजोमय ! प्रेम अपने उच्चतम स्थान पर पहुँचकर देवत्व से मिल जाता है।

(ग) शकुन के लिए समय जैसे एक लम्बे अरसे से ठहर गया था। यों घड़ी की सुई तो बराबर ही चलती थी। रोज सवेरे पीछे आंगन से घुसकर धूप सारे घर को चमकाती—दमकाती दोपहर को लॉन में फैल-पसरकर बैठ जाती और शाम को बड़ी अलसायी-सी धीरे-धीरे सरकती हुई पीछे की पहाड़ियों में छिप जाती। एक-दूसरे को ठेलते हुए मौसम भी आते ही रहे। फिर भी शकुन को लगता था कि समय जैसे ठहरकर जम गया है और जमे हुए समय की यह चट्टान न कहीं से पिघलती थी, न टूटती थी। बस, टूटती रही है तो शकुन—धीरे-धीरे, तिल-तिल।

(घ) सच, हम लोग शायद बंटी को मात्र एक साधन ही समझते रहे। अपने-अपने अहं, अपनी-अपनी महत्वाकांक्षाओं और अपनी-अपनी कुंठाओं के संदर्भ में ही सोचते रहे। बंटी के संदर्भ में कभी सोचा ही नहीं। दो घंटे से खड़ी-खड़ी वह बंटी के नाम पर अपने, डॉक्टर और अजय से जुड़ने-कटने की बातें ही तो सोचती रही है। एकाएक ही बंटी का टुकुर-टुकुर देखता हुआ चेहरा आँखों के सामने उभर आया। बिना बोले, मुँह फेरे-फेरे ही मानो कह रहा हो—मुझे रोक लो ममी, मुझे रोक लो।

4. किसी **एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए : 12

(*i*) 'गबन' उपन्यास की कथावस्तु की समीक्षा कीजिए।

(*ii*) 'गबन' उपन्यास के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

P.T.O.

(*iii*) " 'आपका बंटी' उपन्यास बाल मनोविज्ञान का अनूठा उदाहरण है"—स्पष्ट कीजिए।

(*iv*) 'आपका बंटी' उपन्यास के आधार पर अजय का चरित्र-चित्रण कीजिए।

5. कहानी **अथवा** उपन्यास की विकास-यात्रा का परिचय दीजिए। 12

6. रेखाचित्र **अथवा** संस्मरण का विकासात्मक परिचय दीजिए। 12